International Research Journal of Management Science & Technology



ISSN 2250 – 1959(0nline)
2348 – 9367 (Print)

An Internationally Indexed Peer Reviewed & Refereed Journal

www.IRJMST.com
www.isarasolutions.com

Published by iSaRa Solutions

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर के बौद्ध धर्म ग्रहण का दलित राजनीतिक एवं सामाजिक परिवर्तन पर प्रभाव: एक राजनीतिक अध्ययन

डॉ. बृजेश स्वरुप सोनकर

असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान विभाग

कर्म क्षेत्र स्नातकोत्तर महाविद्यालय, इटावा (उ.प्र.)

सारांश (Abstract)

प्रस्तुत शोध पत्र 14 अक्टूबर 1956 को नागपुर में डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर द्वारा अपने लाखों अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म स्वीकार किए जाने की ऐतिहासिक घटना का राजनीतिक विज्ञान के परिप्रेक्ष्य से एक विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। डॉ. अम्बेडकर का धर्म परिवर्तन केवल एक आध्यात्मिक या व्यक्तिगत निर्णय नहीं था, बल्कि यह हिंदू सामाजिक सोपानक्रम (Caste Hierarchy) और 'अस्पृश्यता' (Untouchability) के विरुद्ध एक सुविचारित राजनीतिक-सांस्कृतिक विद्रोह था। यह अध्ययन यह विश्लेषित करता है कि किस प्रकार बौद्ध धर्म के 'नवयान' (Navayana) स्वरूप ने दलित समुदाय को एक नई स्वायत्त पहचान (Subaltern Identity), आत्मसम्मान और नागरिक चेतना प्रदान की। शोध पत्र में यह परीक्षण किया गया है कि इस धर्म परिवर्तन ने स्वतंत्रता-उत्तर भारत में दलित राजनीति के उभार, दलीय पुनर्गठन (विशेषकर रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया से लेकर दलित पैंथर्स और बहुजन राजनीति तक), सामाजिक गतिशीलता तथा संवैधानिक अधिकारों के प्रति जागरूकता को किस प्रकार रूपांतरित किया।

बीज शब्द (Keywords): डॉ. बी. आर. अम्बेडकर, नवयान बौद्ध धर्म, धर्मांतरण, दलित राजनीति, सामाजिक परिवर्तन, नव-बौद्ध आंदोलन, रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया।

प्रस्तावना (Introduction)

20वीं शताब्दी का मध्य काल भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास में केवल औपनिवेशिक सत्ता के हस्तांतरण और संवैधानिक निर्माण का युग नहीं था, बल्कि यह सदियों से उत्पीड़ित समाजों द्वारा अपनी मानवीय गरिमा, सामाजिक समानता और राजनीतिक स्वायत्तता के दावों का एक गहन संधि-स्थल था। इस कालखंड की सबसे क्रांतिकारी और सुदूरगामी घटनाओं में 14 अक्टूबर 1956 (विजयादशमी) को नागपुर के ऐतिहासिक 'दीक्षाभूमि' मैदान में डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर द्वारा अपने लगभग पाँच लाख (500,000) अनुयायियों के साथ बौद्ध धर्म अंगीकार करना शामिल है। यह सामूहिक धर्मांतरण आधुनिक विश्व इतिहास में बिना किसी हिंसा के संपन्न हुआ सबसे बड़ा सामाजिक-सांस्कृतिक पुनर्जागरण आंदोलन था। डॉ. अम्बेडकर का यह निर्णय किसी तात्कालिक धार्मिक आवेग का परिणाम नहीं था, बल्कि यह 1935 में येवला (नासिक) के प्रांतीय अस्पृश्य सम्मेलन में की गई उनकी उस ऐतिहासिक प्रतिज्ञा की अंतिम परिणति था, जिसमें उन्होंने घोषणा की थी:

"यद्यपि मैं हिंदू के रूप में पैदा हुआ हूँ, क्योंकि यह मेरे वश में नहीं था, किंतु मैं हिंदू के रूप में मरूँगा नहीं।"

राजनीति विज्ञान के परिप्रेक्ष्य से, डॉ. अम्बेडकर द्वारा बौद्ध धर्म स्वीकार करना केवल एक पारलौकिक या आध्यात्मिक अनुष्ठान नहीं था, बल्कि यह हिंदू सामाजिक सोपानक्रम (Caste Hierarchy) और उसकी बहुसंख्यकवादी सांस्कृतिक संरचना के विरुद्ध एक सुविचारित **'काउंटर-हेगेमोनिक' (Counter-Hegemonic)** राजनीतिक हस्तक्षेप था। इसने भारतीय लोकतंत्र में वंचित समाजों को एक स्वतंत्र राजनीतिक पहचान (Subaltern Political Identity), नागरिक चेतना और संगठित दलीय राजनीति के नए क्षितिज प्रदान किए।

1. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य (Historical Context) - डॉ. अम्बेडकर के बौद्ध धर्म ग्रहण करने के निर्णय के पीछे दो दशकों से अधिक का गहन राजनीतिक संघर्ष, संवैधानिक अनुभव और सामाजिक प्रयोगों की एक विस्तृत ऐतिहासिक पृष्ठभूमि थी:

- **संवैधानिक व राजनीतिक संघर्ष की सीमाएँ (1920-1935):** डॉ. अम्बेडकर ने शुरुआत में अस्पृश्य समाज के अधिकारों के लिए हिंदू सामाजिक-धार्मिक ढांचे के भीतर ही संघर्ष किया। उन्होंने महाड़ सत्याग्रह (1927) और कालाराम मंदिर प्रवेश आंदोलन (1930) के माध्यम से नागरिक व धार्मिक अधिकारों का दावा किया। किंतु, इन आंदोलनों के प्रति उच्च-जातीय संभ्रांत वर्ग के कड़े प्रतिरोध और अनुदार रवैये ने अम्बेडकर को यह अहसास कराया कि हिंदू धर्म की संरचनात्मक धुरी (जाति व्यवस्था और अस्पृश्यता) में समतामूलक सुधार संभव नहीं है।
- **1932 का पूना पैक्ट और पृथक निर्वाचक मंडल का प्रश्न:** 1932 के कम्यूनल अवॉर्ड (Communal Award) में दलितों के लिए पृथक निर्वाचक मंडल (Separate Electorate) का प्रावधान किया गया था, किंतु महात्मा गांधी के आमरण अनशन के दबाव में हुए 'पूना पैक्ट' (1932) के कारण दलितों को पृथक राजनीतिक प्रतिनिधित्व के स्थान पर केवल आरक्षित सीटों (Reserved Seats) से संतोष करना पड़ा। इस घटना ने डॉ. अम्बेडकर को यह विश्वास दिलाया कि जब तक दलित वर्ग एक स्वतंत्र सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान हासिल नहीं कर लेता, तब तक बहुसंख्यकवादी चुनावी लोकतंत्र में उनका सच्चा राजनीतिक सशक्तीकरण संभव नहीं होगा।
- **तुलनात्मक धार्मिक अध्ययन और बौद्ध धर्म का चुनाव:** 1935 की येवला घोषणा के बाद डॉ. अम्बेडकर ने अगले 21 वर्षों तक विश्व के प्रमुख धर्मों (इस्लाम, ईसाई, सिख और बौद्ध धर्म) का गहन तुलनात्मक और समाजशास्त्रीय अध्ययन किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि वे किसी ऐसे धर्म को स्वीकार नहीं करेंगे जो उनके अनुयायियों को किसी अन्य विदेशी या राजनीतिक प्रभुत्व के अधीन करे या जो स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व (Liberty, Equality, and Fraternity) के आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों की अवहेलना करता हो। अंततः उन्होंने भारत की माटी से उपजे बौद्ध धर्म को चुना, जिसे उन्होंने तार्किकता, करुणा और न्याय पर आधारित पाया।

2. 1956 के धर्मांतरण के वास्तविक तथ्य एवं घटनाक्रम - दीक्षाभूमि, नागपुर का चयन: 14 अक्टूबर 1956 को धर्मांतरण के लिए नागपुर का चयन अत्यंत विचारपूर्वक किया गया था। नागपुर को ऐतिहासिक रूप से 'नाग' लोगों की भूमि माना जाता था, जिन्होंने प्राचीन भारत में बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में केंद्रीय भूमिका निभाई थी :

- **महास्थवीर चंद्रमणि द्वारा दीक्षा:** बर्मी बौद्ध भिक्षु महास्थवीर चंद्रमणि ने डॉ. अम्बेडकर और उनकी पत्नी सविता अम्बेडकर को 'त्रिशरण' और 'पंचशील' की दीक्षा दी। इसके तत्पश्चात डॉ. अम्बेडकर ने स्वयं अपने सामने उपस्थित पाँच लाख से अधिक अनुयायियों को बौद्ध धर्म में दीक्षित किया।

- **22 प्रतिज्ञाओं (22 Vows) का क्रांतिकारी स्वरूप:** इस अवसर पर डॉ. अम्बेडकर ने अपने अनुयायियों को 22 विशिष्ट प्रतिज्ञाएँ दिलाईं। इन प्रतिज्ञाओं में हिंदू देवी-देवताओं, अवतारवाद, श्राद्ध और पारंपरिक कर्मकांडों का पूर्ण त्याग करने का संकल्प शामिल था। यह प्रतिज्ञाएँ वास्तव में मानसिक दास्ता से मुक्ति और एक स्वायत्त सामाजिक-राजनीतिक नागरिक के रूप में पुनर्जनन का घोषणा-पत्र थीं।
- **'द बुद्ध एंड हिज धम्म' का प्रकाशन:** 1956 में डॉ. अम्बेडकर द्वारा रचित यह ग्रंथ उनके बौद्ध चिंतन का शिखर था, जिसमें उन्होंने बुद्ध के विचारों को सामाजिक न्याय और तार्किकता के संदर्भ में पुनर्व्याख्यायित करते हुए **'नवयान' (Navayana)** के नाम से एक नया सामाजिक-राजनीतिक दर्शन प्रस्तुत किया।

3. राजनीतिक एवं सामाजिक महत्व - राजनीति विज्ञान के दृष्टिकोण से, 1956 के इस ऐतिहासिक घटनाक्रम ने स्वतंत्रता-उत्तर भारत की राजनीति पर त्रिआयामी प्रभाव डाला:

1. **सबअल्टर्न पहचान का निर्माण (Identity Formation):** इसने 'अस्पृश्य' या 'अनुसूचित जाति' की हीनता से भरी औपनिवेशिक/संवैधानिक पहचान को मिटाकर उन्हें 'बौद्ध' की एक गौरवान्वित, आत्मसम्मानयुक्त और प्रगतिशील पहचान प्रदान की।
2. **दलित दलीय राजनीति का पुनर्गठन:** इस धर्मांतरण ने अनुसूचित जाति महासंघ (SCF) के स्थान पर **रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (RPI)** के गठन का मार्ग प्रशस्त किया, जिसका उद्देश्य केवल एक जाति का प्रतिनिधित्व करना नहीं, बल्कि भारत के सभी वंचितों और अल्पसंख्यकों का एक प्रगतिशील राजनीतिक मोर्चा तैयार करना था।
3. **सामाजिक गतिशीलता एवं नागरिक अधिकार:** नव-बौद्धों ने पारंपरिक अपमानजनक जातीय पेशों और बंधुआ मजदूरी का बहिष्कार किया तथा शिक्षा, शहरीकरण और राजनीतिक सहभागिता को अपने सशक्तीकरण का मुख्य माध्यम बनाया।

इस प्रकार, डॉ. अम्बेडकर का बौद्ध धर्म ग्रहण करना केवल एक धार्मिक घटना न होकर, भारत में सामाजिक लोकतंत्र की स्थापना और वंचित समाजों के राजनीतिक सशक्तीकरण का सबसे निर्णायक मोड़ सिद्ध हुआ।

शोध का महत्त्व एवं आवश्यकता (Significance and Need of the Study)

- **राजनीतिक-सैद्धांतिक महत्त्व:** यह अध्ययन यह समझने के लिए एक महत्वपूर्ण सैद्धांतिक ढांचा प्रदान करता है कि आधुनिक समाजों में धार्मिक परिवर्तन किस प्रकार राजनीतिक चेतना और सबअल्टर्न असंतोष को व्यक्त करने का माध्यम बनता है।
- **दलित राजनीति की वैचारिक समझ हेतु:** स्वतंत्रता-उत्तर भारत में दलित राजनीति के विकासक्रम (आरपीआई, दलित पैंथर्स, बामसेफ और बीएसपी) के मूल वैचारिक स्रोतों को समझने के लिए 1956 के बौद्ध धर्मांतरण के प्रभावों का मूल्यांकन अनिवार्य है।
- **सामाजिक परिवर्तन का अध्ययन:** यह शोध यह विश्लेषित करता है कि कैसे धार्मिक पहचान का पुनर्गठन सामाजिक गतिशीलता (Social Mobility) और आत्मसम्मान के निर्माण में सहायक होता है।

शोध समस्या (Statement of the Research Problem)

पारंपरिक इतिहासलेखन में डॉ. अम्बेडकर के बौद्ध धर्म ग्रहण को प्रायः एक धार्मिक या व्यक्तिगत मुक्ति की परिघटना के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। परंतु राजनीति विज्ञान में यह प्रश्न अत्यंत प्रासंगिक है कि क्या अम्बेडकर का नवयान

बौद्ध धर्म वास्तव में एक सुविचारित राजनीतिक रणनीति थी जिसका उद्देश्य दलितों को हिंदू धार्मिक-सामाजिक व्यवस्था की अधीनता से मुक्त कराकर उन्हें एक स्वतंत्र राजनीतिक वर्ग (Independent Political Class) के रूप में स्थापित करना था? प्रस्तुत शोध इस समस्या का गहन परीक्षण करता है।

साहित्य की समीक्षा (Review of Literature) - अम्बेडकर के धर्मांतरण और दलित राजनीति पर विद्वानों ने व्यापक शोध किया है:

1. **ज़ेलियट, ई. (1992) -** ***From Untouchable to Dalit: Essays on the Ambedkar Movement*****:** इलेन ज़ेलियट ने महार जाति के बौद्ध धर्म में रूपांतरण और उनकी राजनीतिक चेतना के क्रमिक विकास का विस्तृत सामाजिक-ऐतिहासिक विश्लेषण प्रस्तुत किया है।
2. **ओमवेड, जी. (2003) -** ***Buddhism in India: Challenging Brahmanism and Caste*****:** गेल ओमवेड का तर्क है कि अम्बेडकर का बौद्ध धर्म (नवयान) पारंपरिक बौद्ध धर्म से भिन्न था; यह स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित एक सामाजिक-राजनीतिक दर्शन था।
3. **जाफ़्रेलॉट, सी. (2005) -** ***Dr Ambedkar and Untouchability: Analysing Irrigation of Ideas*****:** क्रिस्टोफ़ जाफ़्रेलॉट ने दर्शाया कि कैसे बौद्ध धर्म ग्रहण करने के बाद दलितों ने न केवल अपनी हीनता की भावना का त्याग किया, बल्कि भारतीय चुनावी राजनीति में एक संगठित वोट बैंक के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।
4. **क्वीन, सी. एवं किंग, एस. (1996) -** ***Engaged Buddhism: Buddhist Liberation Movements in Asia*****:** क्रिस्टोफर क्वीन ने अम्बेडकर के बौद्ध धर्म को 'एंगेज्ड बुद्धिज्म' (सक्रिय बौद्ध धर्म) के रूप में वर्गीकृत किया, जो सामाजिक-राजनीतिक न्याय की स्थापना के लिए प्रतिबद्ध है।

शोध-अंतराल (Research Gap)

अधिकांश पूर्ववर्ती साहित्य अम्बेडकर के धर्मांतरण के समाजशास्त्रीय या धार्मिक पहलुओं पर अधिक केंद्रित है। वर्तमान शोध का मुख्य उद्देश्य डॉ. अम्बेडकर के बौद्ध धर्म ग्रहण का **राजनीति शास्त्र के सिद्धांतों (जैसे- राजनीतिक पहचान का निर्माण, सबअल्टर्न लामबंदी, चुनावी व्यवहार और दलीय पुनर्गठन)** के आलोक में शुद्ध विश्लेषणात्मक मूल्यांकन करना है।

शोध के उद्देश्य (Objectives of the Study)

1. डॉ. बी. आर. अम्बेडकर द्वारा बौद्ध धर्म के चयन के राजनीतिक-सांस्कृतिक कारणों का विश्लेषण करना।
2. अम्बेडकर द्वारा प्रतिपादित 'नवयान' (Navayana) की वैचारिक संरचना और 22 प्रतिज्ञाओं के राजनीतिक निहितार्थों का परीक्षण करना।
3. बौद्ध धर्मांतरण के पश्चात दलित समुदाय में आई सामाजिक चेतना, आत्मसम्मान और शैक्षणिक गतिशीलता का अध्ययन करना।
4. भारत की चुनावी व दलीय राजनीति (विशेषकर आरपीआई, दलित पैंथर्स और बहुजन आंदोलनों) पर इस धर्मांतरण के प्रभावों का मूल्यांकन करना।

शोध प्रश्न (Research Questions)

1. डॉ. अम्बेडकर ने सामाजिक-राजनीतिक मुक्ति के साधन के रूप में बौद्ध धर्म का ही चयन क्यों किया?
2. 1956 के धर्मांतरण ने दलित समुदाय की पारंपरिक पहचान को एक स्वायत्त राजनीतिक शक्ति में किस प्रकार रूपांतरित किया?
3. बौद्ध धर्मांतरण ने स्वतंत्रता-उत्तर भारत में दलित दलीय राजनीति और लोकतांत्रिक आंदोलनों को किस प्रकार प्रभावित किया?

परिकल्पना (Hypothesis)

- डॉ. अम्बेडकर का बौद्ध धर्म ग्रहण केवल एक आध्यात्मिक घटना नहीं थी, बल्कि यह दलित वर्ग को हिंदू सामाजिक सोपानक्रम से बाहर निकालकर एक स्वतंत्र राजनीतिक पहचान (Political Identity) प्रदान करने की एक सुविचारित रणनीति थी।
- 1956 के धर्मांतरण ने दलितों के भीतर हीनता की भावना को समाप्त कर उनमें संवैधानिक अधिकारों, राजनीतिक सहभागिता और दलीय लामबंदी की नई चेतना का संचार किया।

सैद्धांतिक आधार (Theoretical Framework)

प्रस्तुत अध्ययन राजनीति विज्ञान के **सबअल्टर्न चेतना (Subaltern Consciousness)**, **काउंटर-हेगेमनी (Counter-Hegemony)** तथा **पहचान की राजनीति (Identity Politics)** के सिद्धांतों पर आधारित है। ग्राम्शी के हेगेमनी सिद्धांत के आलोक में, अम्बेडकर का धर्मांतरण उच्च-जातीय सांस्कृतिक वर्चस्व को चुनौती देने के लिए एक 'वैकल्पिक सांस्कृतिक-वैचारिक ढांचे' का निर्माण था।

शोध पद्धति एवं प्रविधि (Research Methodology)

प्रस्तुत शोध पत्र **गुणात्मक, ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक तथा पाठ्य-उन्मुख शोध पद्धति (Qualitative, Historical-Analytical & Textual Analysis Methodology)** पर आधारित है :

- **प्राथमिक स्रोत (Primary Sources):** डॉ. अम्बेडकर की पुस्तक *'द बुद्ध एंड हिज धम्म'* (1957), 1956 के नागपुर भाषण, उनकी 22 प्रतिज्ञाएँ, 'जनता' और 'प्रबुद्ध भारत' के संपादकीय तथा रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया के शुरुआती घोषणा-पत्र।
- **द्वितीयक स्रोत (Secondary Sources):** प्रामाणिक समाजशास्त्रियों और राजनीति शास्त्रियों की पुस्तकें, शोध पत्र तथा भारत की जनगणना (बौद्ध जनसंख्या के आंकड़े) के आधिकारिक रिकॉर्ड।

अध्ययन का क्षेत्र एवं सीमाएँ (Scope and Limitations)

- **क्षेत्र:** यह अध्ययन मुख्य रूप से 1956 के धर्मांतरण से लेकर 20वीं सदी के अंत और 21वीं सदी के प्रारंभिक वर्षों तक भारत की दलित राजनीति और सामाजिक परिवर्तन पर इसके प्रभावों के विश्लेषण तक सीमित है।
- **सीमाएं:** यह शोध पत्र मुख्य रूप से राजनीतिक-सामाजिक प्रभावों के विश्लेषण पर केंद्रित है; इसमें बौद्ध धर्म के विशुद्ध दार्शनिक या सूक्ष्म-धार्मिक सिद्धांतों का विस्तृत विवरण शामिल नहीं है।

विषयगत विवेचन एवं गहन विश्लेषणात्मक अध्ययन

(Thematic Discussion & Deep Analytical Study)

1. बौद्ध धर्म का चयन और 'नवयान' का राजनीतिक दर्शन

डॉ. अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म का चयन अचानक नहीं किया, बल्कि दो दशकों के गहन तुलनात्मक धार्मिक अध्ययन (इस्लाम, ईसाई, सिख और बौद्ध धर्म) के बाद किया। उन्होंने पाया कि बौद्ध धर्म स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व (Liberty, Equality, and Fraternity) के आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित है।

- **22 प्रतिज्ञाओं का राजनीतिक महत्व:** नागपुर में दी गई 22 प्रतिज्ञाएं हिंदू धार्मिक अंधविश्वासों, अवतारवाद और जातिगत प्राथमिकताओं का पूर्ण बहिष्कार करती थीं। ये प्रतिज्ञाएँ दलितों को मानसिक गुलामी से मुक्त करने का एक वैचारिक घोषणा-पत्र थीं।
- **नवयान (Navayana) की अवधारणा:** अम्बेडकर ने बुद्ध के विचारों को सामाजिक न्याय और तार्किकता के संदर्भ में पुनर्व्याख्यायित किया, जिसे 'नवयान' (नया मार्ग) कहा गया। इसमें बौद्ध धर्म को 'दुख' की आध्यात्मिक व्याख्या से आगे बढ़ाकर 'सामाजिक शोषण और असमानता' के उन्मूलन का साधन बनाया गया।

2. सामाजिक परिवर्तन: हीनता से आत्मसम्मान की ओर

1956 के धर्मांतरण ने दलित समाजों (विशेषकर महाराष्ट्र में महार जाति और भारत के अन्य हिस्सों के नव-बौद्धों) के दैनिक जीवन में गहरा परिवर्तन लाया:

1. **सांस्कृतिक-धार्मिक स्वायत्तता:** नव-बौद्धों ने पारंपरिक जाति-आधारित अपमानजनक पेशों और त्योहारों का बहिष्कार किया और अपने विवाह व अन्य संस्कार बौद्ध रीति-रिवाजों से संपन्न कराने शुरू किए।
2. **शैक्षणिक एवं व्यावसायिक गतिशीलता:** बौद्ध धर्म स्वीकार करने के बाद इस समुदाय ने शिक्षा को प्राथमिकता दी। जनगणना आंकड़ों से स्पष्ट होता है कि भारत में नव-बौद्ध समुदाय की साक्षरता दर और उच्च शिक्षा में भागीदारी अन्य अनुसूचित जातियों की तुलना में तेजी से बढ़ी।

3. राजनीतिक प्रभाव: दलित दलीय राजनीति और आंदोलनों का अभ्युदय

क्र. सं.	कालखंड / संगठन	राजनीतिक-सामाजिक प्रभाव एवं विश्लेषण
1.	**रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (RPI - 1957)**	अम्बेडकर की मृत्यु के पश्चात गठित RPI ने नव-बौद्धों और दलितों को एक संगठित दलीय मंच प्रदान किया, जिसने भूमि सुधार और नागरिक अधिकारों के लिए आंदोलन चलाए।
2.	**दलित पैंथर्स आंदोलन (1970 का दशक)**	RPI के विभाजन से असंतुष्ट युवा बौद्ध साहित्यकारों व कार्यकर्ताओं (नामदेव ढसाल, अर्जुन डांगले) ने ब्लैक पैंथर आंदोलन से प्रेरित होकर उग्र सांस्कृतिक व राजनीतिक आंदोलन चलाया।
3.	**बामसेफ व बहुजन राजनीति (1980-90 का दशक)**	कांशीराम ने अम्बेडकरवादी और बौद्ध चेतना को 'बहुजन' (SC, ST, OBC व अल्पसंख्यक) लामबंदी का आधार बनाया, जिससे उत्तर भारत में सत्ता का बड़ा हस्तांतरण संभव हुआ।

4. धम्मचक्र प्रवर्तन और बौद्धिक-राजनीतिक लामबंदी (1956)

14 अक्टूबर 1956 को नागपुर की दीक्षाभूमि पर हुआ धर्मांतरण केवल एक जन-समुदाय की धार्मिक आस्था का परिवर्तन नहीं था, बल्कि यह आधुनिक भारतीय राजनीतिक इतिहास में 'सबअल्टर्न एज्ेंसी' (Subaltern Agency) का सबसे बड़ा प्रदर्शन था। डॉ. अम्बेडकर ने यह सिद्ध किया कि उपेक्षित और शोषित वर्ग अपनी सामाजिक मुक्ति का मार्ग स्वयं तय करने में सक्षम है।

- इस ऐतिहासिक आयोजन में श्रीलंका, म्यांमार और कंबोडिया सहित अंतरराष्ट्रीय बौद्ध जगत के प्रतिनिधि भी उपस्थित थे, जिसने इस घटना को केवल एक राष्ट्रीय सीमा तक सीमित न रखकर वैश्विक दलित-बौद्ध आंदोलन का रूप दे दिया।
- नागपुर के इस दीक्षा समारोह के ठीक बाद, 16 अक्टूबर 1956 को डॉ. अम्बेडकर ने चंद्रपुर में अपने लगभग तीन लाख और अनुयायियों को बौद्ध धर्म की दीक्षा दी। यह निरंतरता यह दर्शाती है कि यह कोई क्षणिक भावात्मक निर्णय नहीं, बल्कि एक सुव्यवस्थित और दूरदर्शी राजनीतिक-सांस्कृतिक अभियान था।

5. "द बुद्ध एंड हिज धम्म" (1957) और नव-बौद्ध वैचारिकी का बौद्धिक आधार

डॉ. अम्बेडकर की मरणोपरांत प्रकाशित कृति *'द बुद्ध एंड हिज धम्म'* (1957) नव-बौद्ध आंदोलन का संविधान साबित हुई :

- पारंपरिक बौद्ध ग्रंथों की तुलना में अम्बेडकर ने बुद्ध के जीवन और दर्शन की पुनर्व्याख्या इस प्रकार की कि वह आधुनिक भारत के सामाजिक न्याय, संवैधानिक लोकतंत्र, स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के मूल्यों के साथ पूरी तरह मेल खा सके।
- उन्होंने बुद्ध को केवल एक वैराग्य संत के रूप में नहीं, बल्कि एक महान समाज सुधारक और 'प्रज्ञा-करुणा' के राजनीतिक दार्शनिक के रूप में प्रस्तुत किया। इस ग्रंथ ने नव-बौद्धों को एक नया बौद्धिक संबल प्रदान किया, जिससे वे उच्च-जातीय बौद्धिक वर्चस्व का मुकाबला करने में सक्षम हुए।

6. नव-बौद्ध आंदोलन और महिला सशक्तीकरण का राजनीतिक आयाम

राजनीति विज्ञान और समाजशास्त्र के परिप्रेक्ष्य से, 1956 के धर्मांतरण का सबसे गहरा प्रभाव दलित महिलाओं की सामाजिक-राजनीतिक स्थिति पर पड़ा :

- हिंदू धार्मिक और पैतृक व्यवस्था में शूद्र और अति-शूद्र महिलाओं को दोहरे उत्पीड़न (जाति और पितृसत्ता) का सामना करना पड़ता था।
- बौद्ध धर्म ग्रहण करने के बाद नव-बौद्ध महिलाओं ने पारंपरिक रूढ़िवादिता, अपमानजनक धार्मिक प्रथाओं और पर्दा प्रथा जैसी कुरीतियों का खुलकर त्याग किया।
- डॉ. अम्बेडकर द्वारा दिलाई गई 22 प्रतिज्ञाओं में महिलाओं की गरिमा, समानता और शिक्षा के अधिकारों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई थी, जिससे स्वतंत्रता-उत्तर भारत में दलित महिलाओं की राजनीतिक और नागरिक सहभागिता में तीव्र वृद्धि हुई।

7. चुनावी राजनीति और भारतीय लोकतंत्र पर धर्मांतरण का दीर्घकालिक प्रभाव

1956 के बौद्ध धर्मांतरण ने भारतीय दलीय राजनीति को भी गहराई से प्रभावित किया:

- **जातिगत पहचान से वैचारिक पहचान की ओर:** इस धर्मांतरण ने दलितों को केवल एक 'अछूत' या 'अनुसूचित जाति' के प्रशासनिक ठप्पे से निकालकर एक 'बौद्ध' यानी स्वायत्त वैचारिक पहचान दी।
- **अम्बेडकरवादी राजनीतिक दलों का उद्भव:** यद्यपि 1956 के तुरंत बाद रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (RPI) के गठन में कुछ आंतरिक राजनीतिक उठापटक और विभाजन देखने को मिले, किंतु नव-बौद्ध समुदाय ने हमेशा एक सजग और मुखर 'वोट बैंक' के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।
- 1970 के दशक का **'दलित पैंथर्स'** आंदोलन और 1980 के दशक के उत्तरार्द्ध में कांशीराम के नेतृत्व में उभरा बहुजन आंदोलन (BAMCEF और BSP) प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से इसी बौद्ध और अम्बेडकरवादी चेतना के राजनीतिक विस्तार थे, जिन्होंने उत्तर भारत की पारंपरिक सवर्ण-प्रधान चुनावी राजनीति के समीकरणों को हमेशा के लिए बदल दिया।

सुझाव एवं नीतिगत निहितार्थ (Suggestions and Policy Implications)

- **समावेशी लोकतंत्र का सुदृढ़ीकरण:** भारतीय लोकतंत्र को केवल राजनीतिक अधिकारों तक सीमित न रखकर सामाजिक और सांस्कृतिक लोकतंत्र की दिशा में मजबूत किया जाना चाहिए, जैसा कि अम्बेडकर की नवयान अवधारणा का मूल विचार था।
- **दलित-बौद्ध पहचान और आरक्षण का दोहरा लाभ:** नीतिगत स्तर पर नव-बौद्धों के सामाजिक-शैक्षणिक अधिकारों के संरक्षण के साथ-साथ उनके विरुद्ध होने वाले अदृश्य जातिगत भेदभाव को समाप्त करने के लिए प्रशासनिक तंत्र को अधिक संवेदनशील बनाने की आवश्यकता है।
- **पाठ्यक्रम में अम्बेडकरवादी दर्शन का समावेश:** शिक्षा व्यवस्था में डॉ. अम्बेडकर के राजनीतिक चिंतन और नवयान बौद्ध धर्म के सामाजिक न्याय के सिद्धांत को व्यापक स्थान मिलना चाहिए।

निष्कर्ष (Conclusion)

प्रस्तुत शोध-पत्र डॉ. बी. आर. अम्बेडकर द्वारा 1956 में बौद्ध धर्म अंगीकार किए जाने के ऐतिहासिक घटनाक्रम, 'नवयान' (Navayana) की वैचारिक संरचना तथा स्वतंत्रता-उत्तर भारत की दलित दलीय राजनीति व सामाजिक गतिशीलता पर इसके सुदूरगामी प्रभावों का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है। शोध में निर्धारित उद्देश्यों, शोध प्रश्नों तथा प्राकल्पनाओं के प्रामाणीकरण के आलोक में मुख्य निष्कर्षों को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से विश्लेषित व संश्लेषित किया गया है:

1. बौद्ध धर्म के चयन के राजनीतिक-सांस्कृतिक कारण एवं 'नवयान' दर्शन (उद्देश्य 1, 2 एवं शोध प्रश्न 1 का निरूपण):

शोध विश्लेषण यह सिद्ध करता है कि डॉ. अम्बेडकर ने सामाजिक-राजनीतिक मुक्ति के साधन के रूप में बौद्ध धर्म का चयन किसी आध्यात्मिक आवेग में नहीं किया। 1927 के महाड़ सत्याग्रह और 1930 के कालाराम मंदिर प्रवेश आंदोलन की विफलता ने यह स्पष्ट कर दिया था कि हिंदू सामाजिक सोपानक्रम (Caste Hierarchy) के भीतर रहते हुए अस्पृश्यता उन्मूलन और समानता की प्राप्ति असंभव है। 1935 की येवला घोषणा के बाद दो दशकों के गहन तुलनात्मक धार्मिक अध्ययन के उपरांत अम्बेडकर ने भारत की माटी से उपजे बौद्ध धर्म को चुना, क्योंकि वह तार्किकता, करुणा और स्वतंत्रता, समानता व बंधुत्व (Liberty, Equality, and Fraternity) के आधुनिक लोकतांत्रिक मूल्यों पर आधारित था। अम्बेडकर द्वारा प्रतिपादित **'नवयान'** पारंपरिक बौद्ध दर्शन से भिन्न था; इसने 'दुख' की

व्याख्या व्यक्तिगत कर्मों के स्थान पर 'सामाजिक शोषण और जातिगत उत्पीड़न' के रूप में की। नागपुर में दिलाई गई **22 प्रतिज्ञाएँ** हिंदू धार्मिक अंधविश्वासों, अवतारवाद और पैतृक प्राथमिकताओं का पूर्ण बहिष्कार करती थीं, जो दलितों को मानसिक गुलामी से मुक्त कर एक विचारशील और स्वायत्त नागरिक बनाने का एक राजनीतिक घोषणा-पत्र साबित हुईं।

2. सामाजिक चेतना, आत्मसम्मान और शैक्षणिक गतिशीलता (उद्देश्य 3 एवं शोध प्रश्न 2 का निरूपण):

1956 के दीक्षाभूमि (नागपुर) धर्मांतरण ने दलित समुदाय की पारंपरिक, हीनता से भरी औपनिवेशिक व प्रशासनिक पहचान (अनुसूचित जाति/अस्पृश्य) को पूरी तरह मिटाकर उन्हें **'बौद्ध'** की एक गौरवान्वित और स्वायत्त सांस्कृतिक-राजनीतिक पहचान (Subaltern Political Identity) प्रदान की। नव-बौद्धों ने पारंपरिक अपमानजनक जातीय पेशों, बंधुआ मजदूरी और जाति-सूचक कर्मकांडों का त्याग किया। इस सांस्कृतिक स्वायत्तता ने समुदाय के भीतर शैक्षणिक उन्नति और उच्च चेतना को जन्म दिया, जिससे स्वतंत्रता-उत्तर भारत में एक सशक्त दलित मध्यम वर्ग और **'दलित साहित्य आंदोलन'** का अभ्युदय हुआ, जिसने पारंपरिक आभिजात्य साहित्य एवं राजनीति की प्राथमिकताओं को चुनौती दी।

3. दलित दलीय राजनीति और आंदोलनों पर प्रभाव (उद्देश्य 4 एवं शोध प्रश्न 3 का निरूपण):

प्रस्तुत शोध से यह प्रमाणित होता है कि 1956 के धर्मांतरण ने स्वतंत्रता-उत्तर भारत में दलित राजनीति के पुनर्गठन और लोकतांत्रिक आंदोलनों को गहराई से अनुप्राणित किया:

- **रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (RPI):** अम्बेडकर के विचारों पर आधारित RPI ने नव-बौद्धों और दलितों को एक संगठित दलीय मंच दिया, जिसने भूमि सुधार और नागरिक अधिकारों के लिए संघर्ष किया।
- **दलित पैंथर्स आंदोलन (1970 का दशक):** आरपीआई के आंतरिक विभाजन के बाद युवा बौद्ध कार्यकर्ताओं व साहित्यकारों ने ब्लैक पैंथर आंदोलन से प्रेरित होकर एक उग्र सांस्कृतिक-राजनीतिक प्रतिरोध खड़ा किया।
- **बहुजन राजनीति का उभार (1980-90 का दशक):** कांशीराम के नेतृत्व में बामसेफ (BAMCEF) और बहुजन समाज पार्टी (BSP) ने अम्बेडकरवादी और बौद्ध चेतना को 'बहुजन' लामबंदी का मुख्य आधार बनाया, जिससे उत्तर भारत की पारंपरिक चुनावी राजनीति का शक्ति-संतुलन बदल गया।

4. परिकल्पनाओं का प्रामाणीकरण एवं सत्यापन (Testing & Validation of Hypotheses):

- **परिकल्पना 1 का प्रामाणीकरण:** ऐतिहासिक साक्ष्यों और राजनीतिक विश्लेषण से यह पूर्णतः सिद्ध होता है कि डॉ. अम्बेडकर का बौद्ध धर्म ग्रहण करना केवल एक व्यक्तिगत या पारलौकिक आध्यात्मिक घटना नहीं थी। हिंदू सामाजिक सोपानक्रम का पूर्ण त्याग कर 22 प्रतिज्ञाओं के माध्यम से एक पृथक सांस्कृतिक व सामाजिक धरातल का निर्माण करना दलित वर्ग को एक स्वतंत्र राजनीतिक पहचान (Political Identity) प्रदान करने की एक सुविचारित और दूरदर्शी रणनीति थी। **अतः परिकल्पना 1 पूर्णतः सिद्ध एवं प्रमाणित होती है।**
- **परिकल्पना 2 का प्रामाणीकरण:** सामाजिक-शैक्षणिक आंकड़ों तथा स्वतंत्रता-उत्तर भारत के राजनीतिक आंदोलनों का विश्लेषण यह प्रमाणित करता है कि 1956 के धर्मांतरण ने दलितों के भीतर सदियों से व्याप्त हीनता-ग्रंथि को समाप्त किया। इसने नव-बौद्ध समुदाय में संवैधानिक अधिकारों के प्रति सजगता, उच्च लोकतांत्रिक सहभागिता और रिपब्लिकन पार्टी से लेकर बहुजन आंदोलनों तक एक अनुशासित दलीय लामबंदी की नई चेतना का संचार किया। **अतः परिकल्पना 2 पूर्णतः सिद्ध एवं प्रमाणित होती है।**

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर द्वारा 1956 में बौद्ध धर्म का अंगीकार आधुनिक भारतीय राजनीति और सामाजिक इतिहास का एक युगांतरकारी मोड़ था। यह शोध पत्र यह निष्कर्ष निकालता है कि अम्बेडकर का धर्मांतरण आंदोलन केवल एक धार्मिक परिवर्तन नहीं था, बल्कि यह भारत में सामाजिक लोकतंत्र और मानवीय गरिमा की पुनर्स्थापना का एक महान राजनीतिक महाअभियान था। अम्बेडकर ने बौद्ध धर्म के 'नवयान' स्वरूप के माध्यम से वंचित समाजों को एक ऐसी वैचारिक ढाल प्रदान की जिसने उन्हें बहुसंख्यकवादी सामाजिक-सांस्कृतिक दमन का सामना करने और लोकतांत्रिक संस्थाओं में अपने संवैधानिक अधिकारों का दावा करने में सक्षम बनाया। स्वतंत्रता-उत्तर भारत में दलित राजनीति की दिशा, दलित साहित्य का अभ्युदय, और सामाजिक न्याय की चेतना का विस्तार काफी हद तक 1956 के उस ऐतिहासिक निर्णय से ही अनुप्राणित रहा है। जब तक भारतीय समाज में जातिगत असमानता के अवशेष विद्यमान रहेंगे, डॉ. अम्बेडकर का नवयान दर्शन मुक्ति और राजनीतिक सशक्तीकरण का मुख्य प्रेरणा स्रोत बना रहेगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

- **अम्बेडकर, बी. आर.** (1946). *हु वर द शूद्राज़?* (शूद्र कौन थे?). थैकर एंड कंपनी.
- **अम्बेडकर, बी. आर.** (1957). *द बुद्ध एंड हिज धम्म.* सिद्धार्थ कॉलेज पब्लिकेशन.
- **इलाया, के.** (1996). *व्हाई आई एम नॉट ए हिंदू: ए शूद्र क्रिटिक ऑफ हिंदू फिलॉसफी, कल्चर एंड पॉलिटिकल इकॉनमी.* साम्या.
- **ओमवेड, जी.** (1976). *कल्चरल रिवोल्ट इन ए कॉलोनियल सोसाइटी: द नॉन-ब्राह्मण मूवमेंट इन वेस्टर्न इंडिया (1873-1930).* साइंटिफिक सोशलिस्ट बुक ट्रस्ट.
- **ओमवेड, जी.** (2003). *बुद्धिज्म इन इंडिया: चैलेंजिंग ब्राह्मणिज्म एंड कास्ट.* सागा पब्लिकेशन.
- **क्वीन, सी., एवं किंग, एस.** (संपादक). (1996). *एंगेज्ड बुद्धिज्म: बौद्ध लिबरेशन मूवमेंट्स इन एशिया.* स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ न्यूयॉर्क प्रेस.
- **जाफ़्रेलॉट, सी.** (2003). *इन्डियाज़ साइलेंट रिवोल्यूशन: द राइज़ ऑफ द लोअर कास्ट्स इन नॉर्थ इंडिया.* सी. हर्स्ट एंड कंपनी.
- **जाफ़्रेलॉट, सी.** (2005). *डॉ. अम्बेडकर एंड अनटचेबिलिटी: एनालाइज़िंग इरिगेशन ऑफ आइडियाज़.* सी. हर्स्ट एंड कंपनी.
- **जोशी, जी. पी.** (संपादक). (1986). *सिलेक्टेड राइटिंग्स ऑफ जोतीराव फुले.* लेफ्टवर्ड बुक्स.
- **ज़ेलियट, ई.** (1992). *फ्रॉम अनटचेबल टू दलित: एसेज ऑन द अम्बेडकर मूवमेंट.* मनोहर पब्लिशर्स.
- **कीर, डी.** (1964). *महात्मा जोतीराव फुले: फादर ऑफ अवर सोशल रिवोल्यूशन.* पॉपुलर प्रकाशन.
- **नागराज, डी. आर.** (1993). *द फ्लैमिंग फीट: एसेज ऑन दलित मूवमेंट.* साऊथ एशियन फोरम.
- **पाटिल, श.** (1982). *दास-शूद्र गुलामगिरी.* सुगत प्रकाशन.
- **फुले, जे.** (1855). *तृतीय रत्न* (नाटक). महाराष्ट्र राज्य साहित्य और संस्कृति मंडल.
- **फुले, जे.** (1873). *गुलामगिरी* (दासता). महाराष्ट्र राज्य साहित्य और संस्कृति मंडल.
- **फुले, जे.** (1883). *शेतकऱ्याचा असूड* (किसान का कोड़ा). महाराष्ट्र राज्य साहित्य और संस्कृति मंडल.
- **फुले, जे.** (1882). *हंटर शिक्षा आयोग के समक्ष प्रस्तुत ज्ञापन.* बॉम्बे प्रेसीडेंसी रिकॉर्ड्स.

ISARA INSTITUTE OF MANAGEMENT & PROFESSIONAL STUDIES

WWW.IIMPS.IN

EARN YOUR

MBA



Accreditation & Ranking

UGC / NCTE Approved.

INFO@IIMPS.IN

011-41005174

RESEARCH GATEWAY

STOP PLAGIARISM

1 Submit your content in Word File.

2 Get report in 48 hrs.

3 *Missing content or references will be fixed.

4 Citation for your work.

5 Get accurate user friendly report.

researchgateway.in | info@researchgateway.in

+91-9205579779

AROGYAM ONLINE

Arogyam Ayurveda

Holistic Healing through herbs

100% NATURAL

PARIVARTAN PSYCHOLOGY CENTER

COLOR PSYCHOLOGY : HOW COLOR AFFECT YOUR CHILD

BLUE — Calms your Child's Mind & Body

YELLOW — Promotes Concentration, Stimulates the Memory

PINK — Evokes Empathy, makes your Child Calm

RED — Excites and energizes your Child's body

GREEN — Improves Reading speed and Comprehension

www.parivartan4u.com

Confuse about your children's future?

भारतीय भाषा, शिक्षा, साहित्य एवं शोध

ISSN 2321 – 9726

WWW.BHARTIYASHODH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SCIENCE & TECHNOLOGY

ISSN – 2250 – 1959 (0) 2348 – 9367 (P)

WWW.IRJMST.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF COMMERCE, ARTS AND SCIENCE

ISSN 2319 – 9202

WWW.CASIRJ.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT SOCIOLOGY & HUMANITIES

ISSN 2277 – 9809 (0) 2348 - 9359 (P)

WWW.IRJMSH.COM

INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF SCIENCE ENGINEERING AND TECHNOLOGY

ISSN 2454-3195 (online)

WWW.RJSET.COM

INTEGRATED RESEARCH JOURNAL OF MANAGEMENT, SCIENCE AND INNOVATION

ISSN 2582-5445

WWW.IRJMSI.COM

JOURNAL OF LEGAL STUDIES,POLITICS AND ECONOMICS RESEARCH

WWW.JLPER.COM